रात्रि क्लास 8-11-68 ओमशान्ति विश्व-शिव बाबा याद है?

सतयुग में कब एक दो खुश-खैरीयत नहीं पूछते हैं। यहां भी नहीं पूछनी चाहिए। क्योंकि यह बाप के साथ रहना तो बहुत ऊंच है। तुम जानते हो हम जन्म-जन्मान्तर सदा सुखी रहेंगे। भविष्य 21 जन्मों लिये सदा सुखी रहेंगे। भविष्य 21 जन्मों लिये सदैव हम खुशी का सुख का वरसा ले रहे हैं बाप से। जिनको बेहद का बाप मिलाउनसे ज्यादा खुशी क्या होगी। परन्तु माया के कारण इतनी खुशी नहीं है। ऐसे भी रहते हैं उन जैसा दुःखी कोई नहीं। फीलिंग ऐसी आती है। बाप के पास तो सभी सुखी होनी चाहिए। रंज आदि की बात ही नहीं। माया ऐसी है जो अति सुखी को भी अति दुःखी बना देता है। कारण। क्योंकि निश्चय में कमी। जो संशय बुधि होते हैंउन जैसा दुःखी फिर कोई भी नहीं। यह दुनिया भी ऐसी है। जो बेहद का बाप जिसको पतियों का पति कहा जाता है उनको नहीं जानते। नहीं तो निश्चय बुधि को बाकी क्या चाहिए। हम भगवान के बच्चे हैं उन से ऊंच कोई हो नहीं सकता। बुधि से काम लिया जाता है। स्टुडन्ट पढ़ते हैं जानते हैं हम 21 जन्म सदा सुखी रहेंगे। वह खुशी कम है? पूरा निश्चय न होने कारण दुःख फील होता है। मनुष्य को और क्या चाहिए। गाया जाता है ना पाना था सो पा लिया बाकी क्या चाहिए। साहूकार को सुख जास्ती होता है। यहां तो हैहो दुःख की दुनिया। बाप कहते हैं साहूकारों को इतना सुख नहीं जितना तुम गरीबों को है। क्योंकि तुम गरीब को बाप मिल जाता है तो अथाह सुख मिल जाता है। अभी तुम समझदार बनते हो। यहां क्वीन का वजीर है तो वह समझदार होगा ना तब तो राय देते हैं। वहां तो राजाओं में इतनी ताकत होती है जो वजीर आदि की दरकार ही नहीं। तुम्हारे ऊपर कोई चढ़ाई कर न सके। इतनी ताकत रहती है। ताकत कहां से मिलती है? बाप से। संशय बुधि को ताकत घूर मिलेगी। सदैव रोगी बिमार भटकतेउटकते रहेंगे। याद नहीं है तो बस नहीं जो दुःख दूर हो जाये। कई तो मम्मा को याद करते हैं। निश्चय बुधि नहीं है। संशय बुधि विनश्यन्ति। यानि दुःख का विनाश हो जाता। इन सभी बातों को कोई बिरला ही समझते हैं। बाबा इनका (ब्रह्माबाबा) फोटो भी नहीं निकालने देते हैं। बाप दादा यह है यह तो समझ की बात है ना। बाप खुद कहते हैं मामेकं याद करो। यह तो रथ है। इनको भी मामेकं याद करना है। फोटो आदि निकालना भी बेकायदे है। परन्तु बच्चे कच्चे हैं, गुह्य बातों को नहीं समझ सकते हैं तो ऐसी2 फोटो की बातें करते हैं। हां झूले में झूलते हैं। बाप दादा साथ झूलते हैं। भगवानुवाच इन से झूलेंगे वहां तब जब निश्चय बुधि होंगे। दास-दासियों थोड़ेही झूलेंगी। वह तो बहुत दूर रहते हैं। यह बहुत2 समझने की बातें हैं। अभी जब कि सच्च खण्ड की स्थापना होती है तो झूठ कब बोलना न चाहिए। कदम2 पर झूठ बोलते हैं। तो उनका क्या हाल होगा। न चाहते भी माया झूठ बोलवाती है। उल्टा काम कराती है। क्योंकि वेवी बुधि है।

ब्रह्मा भोजन की भी बहुत महिमा है। जिनको यह भोजन न मिले तो वह देवता पद पा न सके। यह सभी समझने की बातें हैं। विचार सागर मथन करते रहे तो समझ आ सकते हैं। बड़ी अच्छी दैवी गुण चाहिए। झूठ बोलना, किसको दुःख देना, यह कोई देवीगुण नहीं है। यहां देह-अभिमान की सेफ्टी फर्स्ट रखनी है। नहीं तो माया बहुत विकर्म कराती है। जितना देही-अभिमानी बनते जावेंगे फिर कोई विकर्म न होना चाहिए। सभी पुरुषार्थी हैं नम्बरवार। शरीर को नहीं देखना है। दधिची ऋषि मिसल रात दिन ईश्वरीय सेवा में। सेवा को पांव नहीं पड़ना है। मालिश नहीं करनी है। भक्ति आदि किया कुछ भी मिला। अभी बाप समझाते हैं भक्ति में कुछ भी नहीं मिलता तब तो बाप को पुकारते हैं। आगे चल देखना कितना झुकते हैं तुम्हारे आगे। तब कहेंगे इनमें तो ईश्वर की वाणी भरी हुई है।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

:- विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? -:*